बी०ए० II

समाजशास्त्र –

PAGE NO.
DATE / /

क्रान्ति का अर्थ एवं परिभाषा –

क्रान्ति का अभिप्राय समाज की मौलिक संरचना मूल्यों में एवं सिमित अवधि में आमूल परिवर्तन से इसमें परिवर्तन एकाएक या अचानक ही होता है। जिसके परिणाम पूर्ण व्यवस्था उलट पलट जाती है। इसका आधार जन-सहयोग या संघर्ष होता है। संघर्ष हिंसात्मक एवं अहिंसात्मक हो सकता है। यह सामाजिक आर्थिक राजनीतिक धार्मिक किसी भी क्षेत्र में हो सकता है।

क्रेन ब्रिन्टन के अनुसार – "समाजशास्त्री अर्थ में क्रान्ति वर्तमान सामाजिक संरचना के प्रति मनोवृत्तियों और मूल्यों में आमूल-चूल परिवर्तन को कहते हैं"।

के० यंग के अनुसार – राष्ट्र-राज्य विशेष के अन्दर ही राज्य शक्ति का नये प्रकार की शक्ति में परिवर्तन

द्वारा हथिया लिया जाना ही क्रान्ति है।"

डब्ल्यू० एफ० ऑगबर्न एवं एम० एफ० निमकॉफ के अनुसार — "क्रान्ति संस्कृति में महत्वपूर्ण महत्वपूर्ण प्रकार के तीव्र परिवर्तन को कहते हैं।"

क्रान्ति की विशेषताएँ — क्रान्ति की विशेषताए निम्न प्रकार है।

सार्वभौमिक — क्रान्ति एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है। वह प्रत्येक समाज में पायी जाती है। हर समाज में समय-समय पर क्रान्ति होती रहती है। सभी कालो में शोषण अन्याय, अत्याचार प्रभुत्व आदि का प्रभाव रहा है।

तीव्र परिवर्तन — क्रान्ति तीव्र परिवर्तन का द्योतक क्रान्ति का अर्थ सामाजिक परिवर्तन उस तीव्र प्रक्रिया है। जिसके परिणाम स्वरूप किसी समाज के सदस्य वर्तमान सामाजिक संरचना आदि विचारों के प्रति नये दृष्टिकोण विकसित होते है।

PAGE NO.
DATE: / /

मानसिक प्रक्रिया — क्रान्ति में मस्तिष्क की तीनों प्रक्रियाएं ① अचेतन ② अवचेतन ③ चेतन पायी जाती है। किसी व्यवस्था के प्रति असंतोष अचेतन रूप से प्रतीत करती है।
अनिश्चित दिशा — क्रान्ति की दिशा अनिश्चित होती है। यह निश्चित नहीं रहता है कि इसके परिणाम क्या होंगे?
क्रान्ति में तीव्रता अचानक परिवर्तन गुण अधिक होता है
हिंसक व अहिंसक → क्रान्ति में हिंसा हो सकती है और नहीं भी हो सकती
कभी-कभी क्रान्ति में हिंसा का सहारा लेना पड़ता है।
सामूहिक क्रिया → क्रान्ति का सम्बन्ध अनेक व्यक्तियों से है।
इस प्रकार जब किसी समाज के अधिकांश व्यक्तियों के विचार, एक जगह नये मूल्यों व व्यवहार के सम्बन्ध में स्वीकार किये जाते हैं।
क्रान्ति के प्रमुख कारण — क्रान्ति अनेक कारकों का परिणाम है। महत्वपूर्ण कारक निम्न हैं—
मनोवैज्ञानिक कारक → क्रान्ति का जन्म मानव मन होता है

PAGE NO.
DATE: / /

वैज्ञानिक का मानना है कि क्रान्ति मानव की मूलभूत - मूलप्रवृत्तियां के दमन का परिणाम है। मानव के मूलप्रवृत्ति का दमन समाज के द्वारा नही होता है

आर्थिक कारक — आर्थिक विषमता आर्थिक शोषण असहनीय निर्धनता बेरोजगारी आदि क्रान्ति के कारण है।

सामाजिक कारक — सामाजिक असमानता सामाजिक अन्याय सामाजिक व्यवस्था से असंतोष वर्तमान नवीन सामाजिक मूल्यो में संघर्ष सामाजिक कारण है।

राजनीतिक कारक — राजनीति क्रान्ति का एक महत्व पूर्ण कारण है। जो शासक भ्रष्ट हो अन्यायी हो जनता की-

सांस्कृतिक कारक → सांस्कृतिक भेदभाव नवीन सांस्कृतिक विचारधारा सांस्कृतिक अविष्कार आदि ऐसे सांस्कृतिक कारक है।

युद्ध — क्रान्ति का एक कारक युद्ध है। युद्धो ने अविष्कार की ओर प्रवृत्त किया है। पश्चिमी दुनियां में कुछ अविष्कार एवं अनुसंधान हुआ है। उसके मूल में युद्ध में विजय प्राप्त करने की प्रेरणा भी रही है।

मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताजा, बलिया